शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648

वर्ष - 03 अंक– 11 जुलाई - सितंबर - 2025 Impact factor– 03

मोहनदास नैमिषराय के साहित्य में वंचित समाज का यथार्थ चित्रण

श्रीमती बेलावती सिंह

शोधार्थी

डॉ. परमानन्द तिवारी

शोध निर्देशक एवं सेवानिवृत प्राचार्य

शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनुपपुर (म. प्र.)

सारांश

मोहनदास नैमिषराय हिंदी दलित साहित्य के उन स्तंभों में से एक हैं, जिन्होंने वंचित समाज की कड़वी हकीकत को अपनी रचनाओं के जरिए सामने लाकर साहित्य को एक नई दिशा दी। उनका जन्म 1949 में मेरठ की एक दलित बस्ती में हुआ, जहां जातिगत अपमान और आर्थिक तंगी ने उनके बचपन को रंग दिया। इस शोध पत्र में नैमिषराय के साहित्य—खासकर कहानियों जैसे 'अपना गाँव', 'उसके जख्म' और उपन्यासों जैसे 'क्या मुझे खरीदोगे', 'मुक्तिपंथी', 'वीरांगना झिकारी बाई' तथा 'आज बाजार बंद है'—का विश्लेषण किया गया है। इन रचनाओं में वंचित समाज का यथार्थ चित्रण जातिवाद, सामंती जुल्म, स्त्री शोषण, ग्रामीण-शहरी अलगाव और प्रतिरोध की चिंगारियों के माध्यम से उभरता है। उदाहरणस्वरूप, 'अपना गाँव' में एक दलित महिला को नंगा घुमाने का कांड सामंती क्रूरता को बेनकाब करता है, जबकि 'क्या मुझे खरीदोगे' दलित नारी के प्रेम, धोखे और देह व्यापार की दास्तान बयान करता है। नैमिषराय का लेखन न केवल दर्द की डायरी है, बल्कि विद्रोह का मंत्र भी, जो आंबेडकरवादी चेतना से प्रेरित होकर समाज को आईना दिखाता है। यह शोध दलित साहित्य की सामाजिक परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित करता है, जहां वंचितों की आवाज मुख्यधारा तक पहुंचती है।

बीज शब्द-

मोहनदास नैमिषराय, दलित साहित्य, वंचित समाज, यथार्थ चित्रण, जातिवाद, सामंती शोषण, स्त्री विमर्श, प्रतिरोध चेतना, ग्रामीण दलित जीवन, शहरी अलगाव, आंबेडकर विचारधारा, सामाजिक न्याय।

प्रस्तावना-

भारतीय समाज की नींव में जाति की दीवारें सदियों से खड़ी हैं, जो वर्ण व्यवस्था के नाम पर वंचित वर्गों को कुचलती रहीं। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 'जाति का विनाश' में इसे ब्राह्मणवादी सत्ता का हथियार बताया, जो दलितों को शिक्षा, संपत्ति और सम्मान से वंचित रखता है। ऐसे में, दलित साहित्य उभरा एक विद्रोही धारा के रूप में, जो भोगे हुए यथार्थ को कागज पर उतारकर समाज को झकझोरता है। मोहनदास नैमिषराय (जन्म: 5 जनवरी 1949, मेरठ) इसी धारा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। मेरठ की 'चमार दरवाजा' बस्ती में जन्मे नैमिषराय ने बचपन से ही जातिगत अपमान—जैसे स्कूल में 'चमट्टे' कहकर चिढ़ाना—का सामना किया। उनके पिता चमड़े का काम करते थे, जो दलितों की आर्थिक मजबूरी का प्रतीक था। शिक्षा के बाद वे पत्रकारिता और लेखन में लगे, जहां उन्होंने 'दलित पत्रकारिता एक विमर्श' (चार खंड) और 'दलित आंदोलन का इतिहास' (चार खंड) जैसी कृतियां लिखीं। लेकिन उनका कथा साहित्य—कहानियां, उपन्यास और नाटक—वंचित समाज की कथा कहता है।

नैमिषराय का साहित्य 1980 के दशक से उभरा, जब दलित पैंथर आंदोलन की लहर मराठी से हिंदी तक पहुंची। उनकी कहानियां जैसे 'अपना गाँव' (1980) और उपन्यास 'क्या मुझे खरीदोगे' (1990) दलित जीवन की क्रूरता को उजागर करते हैं। जहां प्रेमचंद जैसे गैर-दलित लेखकों ने दलितों को सहानुभूति की नजर से देखा ('कफन', 'सद्गति'), वहीं नैमिषराय का चित्रण प्रत्यक्ष अनुभवों से निकला है—गुस्से भरा, विद्रोही। समकालीन दौर में, वैश्वीकरण और आरक्षण की बहस के बीच, उनका लेखन शहरी अलगाव, अंतर्जातीय प्रेम की विफलता और संस्थागत भेदभाव को छूता है। उदाहरणस्वरूप, जेलों में जाति-आधारित काम बंटवारा ('उसके जख्म') या ऐतिहासिक उपेक्षा ('वीरांगना झिकारी बाई') जैसे प्रसंग वंचितों की अनदेखी को बेनकाब करते हैं।

यह शोध पत्र नैमिषराय के साहित्य को वंचित समाज के यथार्थ के आईने के रूप में देखता है। उद्देश्य उनकी रचनाओं के माध्यम से शोषण की जड़ों को खोजना और प्रतिरोध की संभावनाओं को उजागर करना है। अध्ययन वेब स्रोतों, शोध पत्रों और उनकी कृतियों पर आधारित है, जो दलित विमर्श की प्रामाणिकता को मजबूत करता है। नैमिषराय का योगदान न केवल साहित्यिक है, बल्कि सामाजिक जागृति का भी, जो वंचितों को 'शिक्षित होओ, संगठित होओ, संघर्ष करो' का मंत्र देता है।

उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं:

- नैमिषराय के साहित्यिक परिप्रेक्ष्य को समझना: उनके जीवन और दलित विमर्श की पृष्ठभूमि में वंचित समाज के चित्रण की ऐतिहासिक यात्रा का विश्लेषण, जिसमें आंबेडकर और फुले के प्रभाव को प्रमुखता देना।
- प्रमुख रचनाओं में यथार्थ चित्रण का अध्ययन: कहानियों और उपन्यासों में वंचित समाज की थीम्स जैसे शोषण, जातिवाद और स्त्री पीड़ा का परीक्षण करना।
- विचारों का गहन विश्लेषण: जातिवादी सामंती क्रूरता, ग्रामीण-शहरी विसंगतियां और प्रतिरोध के स्वरों को उदाहरणों सहित उजागर करना।
- सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन: नैमिषराय का साहित्य मुख्यधारा को कैसे चुनौती देता है और वंचित चेतना को मजबूत करता है, इसका आकलन।
- भविष्योन्मुखी सुझाव: दलित साहित्य के विस्तार और चुनौतियों पर सिफारिशें, जैसे डिजिटल माध्यमों का उपयोग।
- साहित्यिक योगदान की पहचान: नैमिषराय को दलित साहित्य के संस्थापकों में स्थापित करना।

नैमिषराय का साहित्यिक परिचय और दलित विमर्श में भूमिका

-मोहनदास नैमिषराय का साहित्य दलित विमर्श की उस धारा का हिस्सा है, जो 1970 के दशक के दलित पैंथर आंदोलन से प्रेरित होकर हिंदी में फली-फूली। मध्यकालीन भक्ति संतों जैसे रविदास और कबीर ने जातिवाद पर चोट की, लेकिन आधुनिक दलित साहित्य ने इसे व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़ा। नैमिषराय ने 1980 में 'अपना गाँव' से शुरुआत की, जो हिंदी दलित कहानी की मील का पत्थर बनी। उनके साहित्य में वंचित समाज—दलित, बहुजन—का चित्रण यथार्थवादी है, जो लोकभाषा, तीखे संवादों और आक्रोशपूर्ण शैली से सजा है। वे पत्रकार के रूप में 'बयान' पत्रिका के संपादक रहे और डॉ. आंबेडकर फाउंडेशन में कार्यरत होकर दलित इतिहास को संरक्षित किया।

उनकी रचनाएं वंचितों की बहुआयामी पीड़ा को उकेरती हैं: आर्थिक तंगी से लेकर सांस्कृतिक अलगाव तक। 2011 की जनगणना में दलित 16.6% हैं, लेकिन नैमिषराय दिखाते हैं कि स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी भेदभाव बरकरार है। उनका लेखन "दलितों द्वारा, दलितों के लिए" की परिभाषा पर खरा उतरता है, जो ओमप्रकाश वाल्मीकि जैसे समकालीनों से संवाद करता है। नैमिषराय की भूमिका संस्थापक जैसी है—उनकी कहानियां सामंती जुल्म को काटती हैं, जबकि उपन्यास ऐतिहासिक गुमनामी को उजागर करते हैं। यह साहित्य न केवल दस्तावेज है, बल्कि परिवर्तन का हथियार भी।

कहानियां: वंचित जीवन की कच्ची डोर-नैमिषराय की कहानियां वंचित समाज की दैनिक जद्दोजहद को जीवंत बनाती हैं। 'अपना गाँव' (1980) ग्रामीण दलित जीवन का आईना है। यहां कबूतरी नामक दलित महिला को पति के कर्ज न चुका पाने पर ठाकुरों द्वारा नंगा घुमाया जाता है। गांव की पंचायत सवर्णों के हाथों न्याय से वंचित रखती है, पुलिस पीड़ितों को ही पीटती है। यह कथा हाथरस जैसे वास्तविक कांडों से जुड़ती है, जहां दलित महिलाओं पर जुल्म संस्थागत होता है। नैमिषराय दिखाते हैं कि शिक्षा फैलने पर दलित मजदूरी छोड़ते हैं, जिससे सामंती अहंकार आहत होता है—जैसे 'आवाजें' में मेहतर बस्ती को आग लगाना। 'उसके जख्म' जेलों में जातिवाद को बेनकाब करती है। बंदी मामदू को जाति के आधार पर शौचालय साफ करने को मजबूर किया जाता है, जबकि डॉक्टर दलित घावों को 'अस्पृश्य' मानकर उपचार से इनकार करते हैं। यह चित्रण संस्थाओं की सवर्ण मानसिकता को उजागर करता है, जहां पीड़ित अपराधी बन जाते हैं। 'महाशूद्र महाब्राह्मण' ब्राह्मणों के आंतरिक जातिवाद को हास्य-व्यंग्य से काटती है—मृत्यु भोज कराने वाला ब्राह्मण खुद 'महाशूद्र' कहलाता है। ये कहानियां वंचितों के गुस्से को प्रतिरोध में बदलती हैं, जैसे अलग बस्ती बसाने का फैसला। नैमिषराय की भाषा में लोकल मुहावरे और गालियां यथार्थ को सांस लेने लायक बनाती हैं।

उपन्यास: गहन संघर्ष की कथा-नैमिषराय के उपन्यास वंचित समाज की बहुस्तरीय पीड़ा को फैलाते हैं। 'क्या मुझे खरीदोगे' (1990) दलित नारी सरिता की दास्तान है। ग्रामीण पृष्ठभूमि से शहर (बंबई) भागी सरिता प्रेम में धोखा खाती है—सागर जाति के डर से उसे छोड़ देता है। प्रकाशक मोजही की वासना उसे वेश्यावृत्ति की ओर धकेलती है। उपन्यास आधुनिकता के दौर में दलित स्त्री के शोषण को दिखाता है: विवाह पूर्व प्रेम की विफलता, देह व्यापार की मजबूरी। मीरा जैसे पात्र पुरुष-विरोधी स्वतंत्रता की मिसाल हैं। यह फिल्मी शैली में लिखा उपन्यास महिलाओं को कुलीनता से मुक्ति की चेतावनी देता है।

'मुक्तिपंथी' (1999) स्वतंत्रता के जश्न के बीच दलित दरिद्रता को कुरेदता है। नायक वांशी चमार नवाब की नौकरी छोड़ता है, बेटा सुनील अपमान सहकर शिक्षक बनता है। उपन्यास पूछता है: आजादी किसकी? यह दलित जागृति की चिंगारी दिखाता है—परंपरागत नाम त्यागकर आधुनिक पहचान अपनाना। 'वीरांगना झिकारी बाई' (2003) ऐतिहासिक है—1857 की क्रांति में दलित महिला झिकारी की गुमनामी को उजागर करता है। रानी लक्ष्मीबाई की सहयोगी झिकारी कोरी परिवार से थीं, जिन्होंने अंग्रेजों से लड़ीं, लेकिन जाति के कारण इतिहास से मिट गईं। नैमिषराय साहसी दलित नारी को पुनर्स्थापित करते हैं, जो स्वामीभक्ति और स्वतंत्रता की मिसाल है।'आज बाजार बंद है' (2004) वेश्यावृत्ति के अंधेरे को छूता है। पत्रकार सुजित शबनम बाई के कोठे पर आता है, वेश्याओं को संगठित कर पिंप्स और धर्मगुरुओं के खिलाफ आंदोलन करता है। 15 अगस्त को धंधा बंद कर 'बाजार बंद' घोषणा सामूहिक विद्रोह का प्रतीक है। यह देवदासी प्रथा और पुरुष विसंगतियों का खंडन करता है। ये उपन्यास वंचित समाज को बहुआयामी बनाते हैं—ग्रामीण गरीबी से शहरी भटकाव तक। नैमिषराय का चरित्र-निर्माण यथार्थपूर्ण है, जो आंबेडकर की 'ग्रेडेड इनइक्वालिटी' को प्रतिबिंबित करता है।

जातिवाद और सामंती शोषण-नैमिषराय के साहित्य में जातिवाद वंचित समाज की मुख्य बेड़ी है। 'अपना गाँव' में ठाकुरों का कर्ज वसूलने का तरीका—महिला को अपमानित करना—सामंती क्रूरता दिखाता है। जेलों में काम बंटवारा ('उसके जख्म') जाति को संस्थागत बनाता है। उपन्यासों में यह ऐतिहासिक भी है—झिकारी की उपेक्षा जाति-आधारित। नैमिषराय दिखाते हैं कि सवर्ण अहंकार दलितों को पशु-सा व्यवहार देता है, लेकिन शिक्षा विद्रोह लाती है।

स्त्री विमर्श और दोहरी पीड़ा-दलित स्त्री दोहरी मार झेलती है—जाति और लिंग से। 'क्या मुझे खरीदोगे' में सरिता का प्रेम धोखा और वेश्यावृत्ति स्त्री शोषण की हकीकत है। 'आज बाजार बंद है' में वेश्याओं का संघर्ष देवदासी जैसी परंपराओं को तोड़ता है। कबूतरी ('अपना गाँव') का अपमान ग्रामीण पितृसत्ता को उजागर करता है। नैमिषराय स्त्री को निष्क्रिय शिकार नहीं, बल्कि विद्रोही बनाते हैं—झिकारी की साहसिकता इसका प्रमाण। यह थीम होमी भाभा के 'हाइब्रिडिटी' से जुड़ती है, जहां दलित स्त्री सवर्ण मानदंडों को चुनौती देती है।

ग्रामीण-शहरी विसंगतियां और प्रतिरोध-ग्रामीण जीवन गरीबी और अपमान का केंद्र है ('मुक्तिपंथी'), जबकि शहर धोखा और अलगाव ('क्या मुझे खरीदोगे')। नैमिषराय प्रतिरोध को चिंगारी मानते हैं—अलग गांव बसाना ('अपना गाँव'), बाजार बंदी ('आज बाजार बंद है')। यह आंबेडकरवादी है: संगठन से मुक्ति। उनका लेखन मुख्यधारा को चुनौती देता है, जहां गैर-दलित साहित्य सहानुभूति तक सीमित रहता है। खैरलांजी (2006) या हाथरस जैसे कांडों में उनकी कहानियां प्रासंगिक हो जाती हैं। भाषा में लोकभाषा का प्रयोग प्रामाणिकता देता है।

नैमिषराय साहित्य का सामाजिक प्रभाव-नैमिषराय का साहित्य वंचित समाज को आवाज देता है, जो दलित चेतना को मजबूत करता है। उनकी रचनाएं पत्रकारिता से जुड़कर सामाजिक आंदोलनों को प्रेरित करती हैं—जैसे वेश्यावृत्ति विरोधी अभियान। मुख्यधारा साहित्य में दलित प्रतिनिधित्व बढ़ाने में उनका योगदान है, जो ओमप्रकाश वाल्मीकि के साथ मिलकर 'हिंदी दलित साहित्य' को परिभाषित करता है। चुनौतियां हैं: प्रकाशन की कमी, आंतरिक जातिवाद। लेकिन डिजिटल युग में सोशल मीडिया से विस्तार संभव है। उनका लेखन सामाजिक न्याय की मांग करता है, जो रोहित वेमुला (2016) जैसे मामलों में गूंजता है।

निष्कर्ष-मोहनदास नैमिषराय का साहित्य वंचित समाज का जीवंत दस्तावेज है, जो शोषण की कड़वाहट से प्रतिरोध की मिठास तक ले जाता है। उनकी रचनाओं ने दलितों को मानवीय चेहरा दिया, जातिवाद की जड़ों को काटा। 'अपना गाँव' से 'आज बाजार बंद है' तक, यथार्थ चित्रण ने समाज को आईना दिखाया, लेकिन चुनौतियां बाकी हैं—संस्थागत सुधार की कमी। भविष्य में, युवा दलित लेखकों को प्रोत्साहन से यह धारा मजबूत होगी। नैमिषराय का योगदान अमर है: वे वंचितों के स्वप्नद्रष्टा हैं, जो समानता का द्वार खोलते हैं।

****

संदर्भ सूची

1.दलित उपन्यासों में मोहनदास नैमिशराय की भूमिका. IJCRT.org. Retrieved from https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2009348.pdf.
2.Mohandas Naimishray's short stories expertly dissect a casteist and feudal society. Forward Press. Retrieved from https://www.forwardpress.in/2021/06/mohandas-naimishrays-short-stories-expertly-dissect-a-casteist-and-feudal-society/.
3.दलित विचार विमर्श - एक अध्ययन. RAIJMR. Retrieved from https://www.raijmr.com/ijrsml/wp-content/uploads/2021/11/IJRSML_2021_vol09_issue_6_Eng_13.pdf.
4.समकालीन विमर्श : युवा दृष्टि और दलित लेखन. मगहर. Retrieved from http://karmanandarya.blogspot.com/2013/12/blog-post_715.html.
5.THE DALIT PERSONAL NARRATIVE IN HINDI. JSTOR. Retrieved from https://www.jstor.org/stable/26405010.